M.J.C. (Paper-9), Semester-5

Topic: Disintegration of Mughal Power: Main Political Trends. (1)

प्रस्तावना :—

Mughal Empire का पतन 18 वीं शताब्दी में भारतीय इतिहास की एक निर्णायक प्रक्रिया थी। 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु के बाद साम्राज्य की केंद्रीय शक्ति तेजी से कमजोर हुई। यह पतन अचानक नहीं था, बल्कि राजनीतिक, प्रशासनिक, सैन्य और प्रांतीय प्रवृत्तियों के परिणामस्वरूप क्रमिक विघटन (disintegration) था।

→ उत्तराधिकार युद्ध और केंद्रीय सत्ता का पतन :—

- औरंगजेब के बाद स्पष्ट उत्तराधिकार नीति का अभाव।
- 1707–1719 के बीच कई शासकों का अल्पकालिक शासन।
- दरबारी गुटबाजी – सैयद बंधु (King makers) का प्रभाव।
- सम्राट की वैधानिक स्थिति तो बनी रही, पर वास्तविक शक्ति सरदारों और प्रांतीय सूबेदारों के हाथों में चली गई।

केन्द्रीय सत्ता के कमजोर होने से साम्राज्य का राजनीतिक केन्द्रीकरण समाप्त हो गया और साम्राज्य मात्र की संप्रभुता" तक सीमित रह गया।

→ प्रांतीय स्वायत्तता का उदय (Rise of Autonomous States) :—

1. हैदराबाद

- निजाम-उल-मुल्क आसफ जहाँ ने 1724 में स्वतंत्र हैदराबाद राज्य की स्थापना की।
- मुगल सम्राट के प्रति औपचारिक निष्ठा, परन्तु वास्तविक स्वतंत्रता।

Scanned with OKEN Scanner

2. बंगाल :—
मुर्शिद कुली खाँ ने बंगाल को व्यवहारिक रूप से स्वतंत्र बनाया।
बंगाल आर्थिक रूप से सुदृढ़ प्रांत था।

3. अवध :-
शादत खान ने अवध में स्वतंत्र सत्ता स्थापित की।

मुख्य प्रवृत्ति :

- Subedari से Sovereignty की ओर संक्रमण।
- प्रांतों ने कर वसूलने, सेना रखने और प्रशासन चलाने में स्वतंत्रता प्राप्त की।
- केन्द्र की वित्तीय निर्भरता समाप्त होने लगी।

⟹ क्षेत्रीय शक्तियों का उदय :—

1. मराठा शक्ति :—
   - शिवाजी द्वारा स्थापित मराठा राज्य 18 वीं शताब्दी में विस्तार पाया।
   - पेशवाओं के नेतृत्व में उत्तर भारत में प्रभाव।
   - 1719 के बाद मुगल दरबार की राजनीति में हस्तक्षेप।

2. सिख शक्ति :—
   - गुरु गोबिंद सिंह के बाद खालसा पंथ का संगठन।
   - पंजाब में सिखों का उदय।

3. जाट और रोहिल्ला
   - भरतपुर में जाट शक्ति का उदय।
   - रोहिलों ने रुहेलखंड क्षेत्र में सत्ता स्थापित की।

Scanned with OKEN Scanner